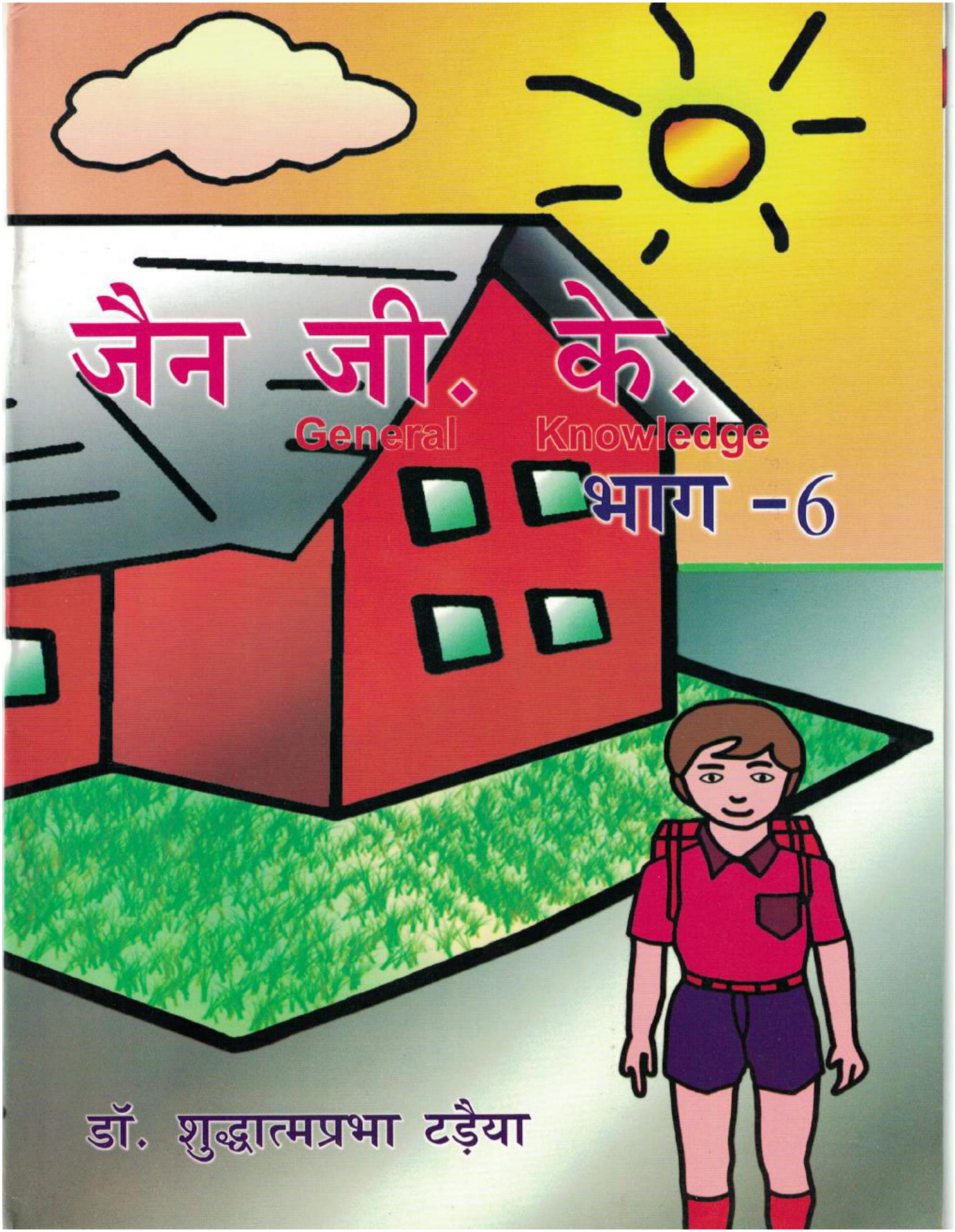

जैन जी. के.

General Knowledge

भाग -6

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

1 प्रार्थना

हे भगवन !
सुख खोज रहा था मैं,
दर-दर भटक रहा था मैं ।
संपत्ति में नहीं मिला मुझे सुख,
परिवार में मिला दुःख-ही-दुःख ।
इस प्रकार
एक दुःख दूर करने गया जब मैं,
अनेक दुःखों से घिर गया तब मैं ।
आपका उपदेश सुना जब मैंने,
संसार का स्वरूप जाना तब मैंने ।
बाह्य विषयों में न मिलेगा सुख,
निजात्मा में ही मुझे मिलेगा सुख ।

2 निजात्मा

१. भगवान किसकी उपासना से भगवान बने?
निजात्मा की उपासना से।

२. भगवान किसकी उपासना निरंतर कर रहे हैं?
निजात्मा की ।

३. साधना किसकी करनी चाहिए?
निजात्मा की।

४. आराधना किसकी करनी चाहिए?
निजात्मा की।

५. हम भगवान कैसे बन सकते हैं?
निजात्मा की उपासना से।

६. निजात्मा से भिन्न समस्त जगत को एक शब्द में क्या कहते हैं?
अनात्मा ।

७. निजात्मा की उपासना से क्या तात्पर्य है?
निज को निज रूप मानना।

८. निज को निज रूप मानने का फल क्या है?
मोक्ष की प्राप्ति।

९. पर को निज रूप मानने का फल क्या है?
चारों गतियों में घूमना (भवभ्रमण)।

3 भावों का फल

१. जीव नरक- स्वर्गादि गतियों को क्यों प्राप्त करता है ?
जीव अपने भावों के अनुसार स्वयं गतियाँ प्राप्त करता है ।

२. जीव को किन भावों से मनुष्यगति मिलती है ?
अल्प आरंभ[१] और अल्पपरिग्रह रखने के भाव से तथा स्वभाव की सरलता से।

३. जीव को किन भावों से तिर्यंचगति मिलती है ?
मायाचारी के भावों से।

४. जीव को किन भावों से नरकगति मिलती है ?
बहुत आरंभ और बहुत परिग्रह रखने के भावों से।

५. जीव को किन भावों से देवगति मिलती है ?
अज्ञानपूर्वक तप से, संयम के साथ रहनेवाले शुभभावोंरुप रागांश से तथा असंयमांश मंद कषायरुप भावों से।

६. जीव को पंचमगति किन भावों से मिलती है ?
वीतराग भाव से।

७. वीतराग भाव कैसे होता है ?
अपने लक्ष्य से होने वाले परिणामों से वीतराग भाव होता है।

८. अपने लक्ष्य से होने वाले परिणामों का फल क्या है ?
बंध का नाश।

९. बंध किन भावों से होता है ?
पर के प्रति शुभ अशुभ परिणामों से।

१०. चारों गतियों में जीव को कौन भेजता है ?
चारों गतियों में जीव को भेजने वाला ईश्वरादि अन्य कोई सर्व शक्तिमान नहीं है; अपितु जीव स्वयं ही अपने भावों के अनुसार गतियाँ प्राप्त करता है।

१ प्राणीयों को दु:ख पहुँचाने वाले कार्य ।

4 सबसे बड़ा दुःख

१. सबसे बड़ा दुःख क्या है ?
जन्म-मरण का दुःख ।

२. सबसे अधिक दुःख किस गति में है ?
तिर्यंच गति में ।

३. तिर्यंच गति में सब से अधिक दुःखी कौन से जीव हैं?
एकेन्द्रिय जीव ।

४. एकेन्द्रिय जीव सब से अधिक दुःखी क्यों है ?
क्योंकि एकेन्द्रिय जीव में निगोद शामिल है। निगोदिया जीव एक श्वास के काल में १८ बार जन्मते और मरते हैं तथा जन्म-मरण ही सबसे बड़ा दुःख है।

५. क्या एकेन्द्रिय जीवों की कषायें बाह्य में प्रगट होती हैं?
नहीं ।

६. एकेन्द्रिय जीवों की कषायें प्रगट क्यों नहीं होती हैं?
क्योंकि वे हीन शक्ति वाले हैं ।

७. किस गति के जीवों की कषायें बाह्य में सबसे अधिक प्रगट होती हैं?
नरक गति में ।

८. भोगों में सुख मानने वाले कहाँ सुख मानते हैं?
देव गति में ।

९. देव दुःखी हैं या सुखी ? और क्यों ?
देव दुःखी ही होते हैं, क्योंकि उनको भी कषायें होती हैं ।

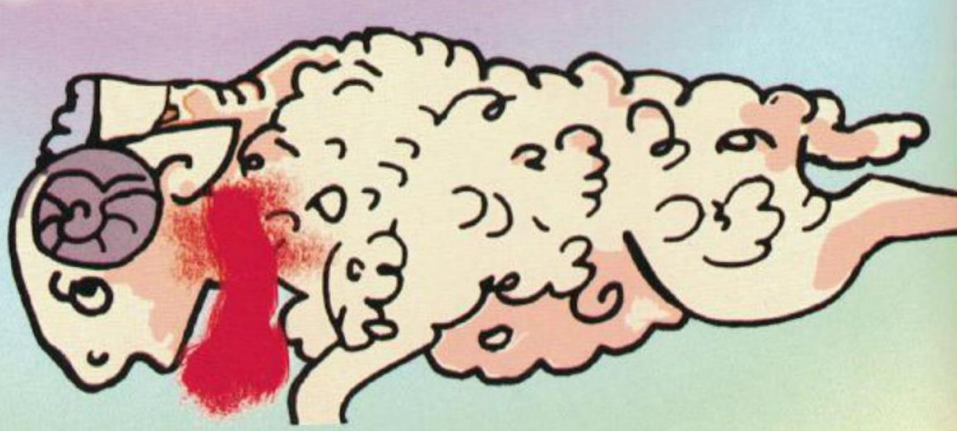

5 दु:खों का कारण

संसार का कारण हूँ मैं,
दु:खों का मूल हूँ मैं ।
अनादि की भूल हूँ मैं,
बताओ कौन हूँ मैं ?
अगृहीत मिथ्यात्व

नर भव की कमाई हूँ मैं,
नष्ट पहले होता हूँ मैं ।
नई भूल हूँ मैं,
बताओ कौन हूँ मैं ?
गृहीत मिथ्यात्व

१. दु:खों का मूल कारण क्या है ?
मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान, मिथ्याचारित्र ।

२. मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र कितने प्रकार के हैं ?
मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों दो प्रकार के हैं - अगृहीत और गृहीत।
अगृहीत मिथ्यादर्शन, गृहीत मिथ्यादर्शन।
अगृहीत मिथ्याज्ञान, गृहीत मिथ्याज्ञान।
अगृहीत मिथ्याचारित्र, गृहीत मिथ्याचारित्र।

३. अगृहीत से क्या तात्पर्य है ?
जो अनादि से हमारे साथ है, वह अगृहीत है ।

४. गृहीत से क्या तात्पर्य है ?
जिसे हमने नया ग्रहण किया है, वह गृहीत है ।

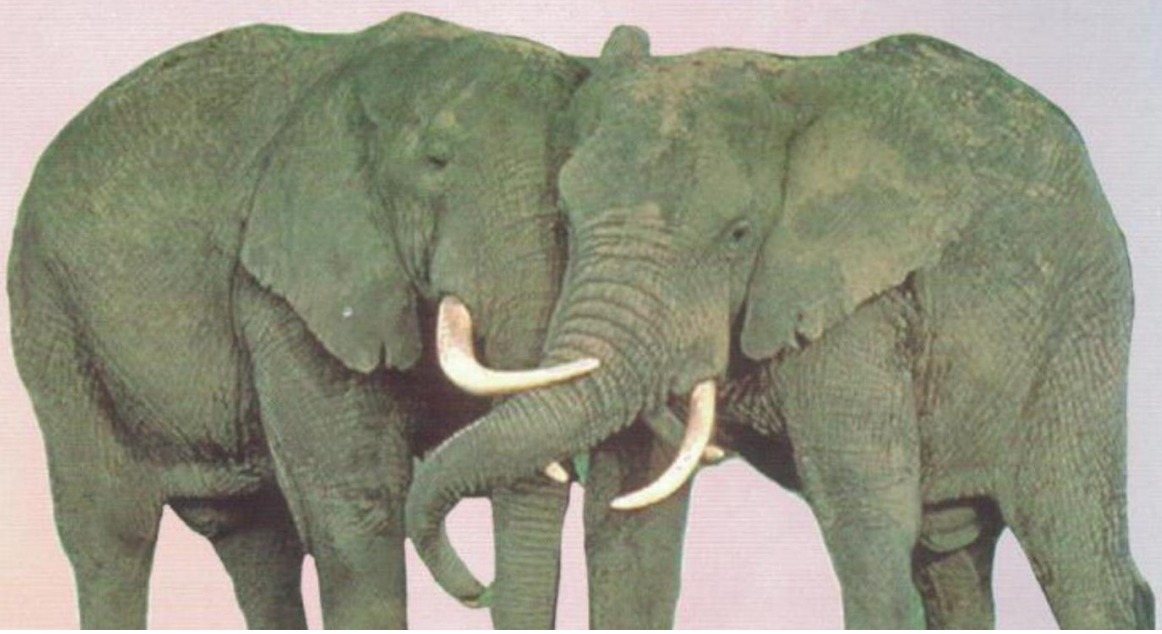

6 अगृहीत - गृहीत मिथ्यात्व

१. अगृहीत मिथ्यादर्शन से क्या तात्पर्य है ?

सात तत्त्व संबंधी अनादिकालीन अश्रद्धा अगृहीत मिथ्यादर्शन है अर्थात् बिना सिखाए अनादि से ही पर पदार्थों में अहंबुद्धि, ममत्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि का होना ही अगृहीत मिथ्यादर्शन है ।

२. अगृहीत मिथ्याज्ञान से क्या तात्पर्य है ?

सात तत्त्व संबंधी अनादिकालीन अज्ञान अगृहीत मिथ्याज्ञान है ।

३. अगृहीत मिथ्याचारित्र से क्या तात्पर्य है ?

अनादिकालीन अगृहीत मिथ्यात्व सहित - पंचेन्द्रिय विषयों में प्रवृत्ति अगृहीत मिथ्याचारित्र है ।

४. गृहीत मिथ्यादर्शन से क्या तात्पर्य है ?

कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्र के निमित्त से सात तत्त्वों के विषय में होने वाली भूल को पुष्ट करना गृहीत मिथ्यादर्शन है ।

५. गृहीत मिथ्याज्ञान से क्या तात्पर्य है ?

राग-द्वेष पोषक शास्त्रों को सही मानकर उनका अभ्यास करना गृहीत मिथ्याज्ञान है ।

६. गृहीत मिथ्याचारित्र से क्या तात्पर्य है ?

प्रशंसादि के लोभ से धर्म के नाम पर शरीर को कष्ट देने वाली अनेक क्रियायें करना गृहीत मिथ्याचारित्र है ।

७. गृहीत मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र किस-किस गति में होता है ?

केवल मनुष्य गति में ।

7 कुदेव-कुगुरु-कुशास्त्र

१. कौन से देव कुदेव हैं ?

कुदेव कोई देव विशेष नहीं हैं, अपितु रागी-द्वेषी देवी-देवताओं में सच्चेदेव की मान्यता ही कुदेव है।

२. कौन से गुरु कुगुरु हैं ?

कुगुरु कोई व्यक्ति विशेष नहीं हैं, अपितु जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान सहित सम्यक्चारित्र से सम्पन्न नहीं हैं, उनमें गुरु बुद्धि होना ही कुगुरु है ।

३. कौन से शास्त्र कुशास्त्र हैं ?

कुशास्त्र कोई शास्त्र विशेष नहीं हैं, अपितु जो शास्त्र वीतरागता के पोषक नहीं हैं, उनमें शास्त्र बुद्धि ही कुशास्त्र है ।

8 क्या आप जानते हो?

१. कषाय कितने प्रकार की होती हैं ?
कषाय २५ प्रकार की होती हैं ।
१ अनंतानुबंधी क्रोध २ अनंतानुबंधी मान
३ अनंतानुबंधी माया ४ अनंतानुबंधी लोभ
५ अप्रत्याख्यानावरण क्रोध ६ अप्रत्याख्यानावरण मान
७ अप्रत्याख्यानावरण माया ८ अप्रत्याख्यानावरण लोभ
९ प्रत्याख्यानावरण क्रोध १० प्रत्याख्यानावरण मान
११ प्रत्याख्यानावरण माया १२ प्रत्याख्यानावरण लोभ
१३ संज्वलन क्रोध १४ संज्वलन मान
१५ संज्वलन माया १६ संज्वलन लोभ,
नौ नोकषाय
१७ हास्य १८ रति १९ अरति २० शोक
२१ भय २२ जुगुप्सा २३ स्त्रीवेद २४ पुरुषवेद
२५ नपुंसकवेद।

२. नोकषाय किसे कहते हैं ?
किंचित् कषाय को।

३. आत्मा के सम्यक्त्व परिणाम का घात कौन सी कषाय करती है ?
अनंतानुबंधी।

४. देशव्रत परिणामों का घात कौन सी कषाय करती है ?
अप्रत्याख्यानावरण।

५. सकलव्रत के परिणामों का घात कौन सी कषाय करती है ?
प्रत्याख्यानावरण ।

६. पूर्ण चारित्र में दोष कौन सी कषाय उत्पन्न करती है ?
संज्वलन

9 बताओ तो जानें?

१. परपदार्थों में 'यह मैं हूँ'- ऐसी मान्यता का नाम क्या है ?
एकत्वबुद्धि ।

२. परपदार्थों में 'यह मेरे हैं'- ऐसी मान्यता का नाम क्या है ?
ममत्वबुद्धि ।

३. 'मैं परपदार्थों की क्रिया का कर्त्ता हूँ'-
ऐसी मान्यता का नाम क्या है ?
कर्तृत्वबुद्धि।

४. 'मैं परपदार्थों का भोग-उपभोग करता हूँ'-
ऐसी मान्यता का नाम क्या है ?
भोक्तृत्वबुद्धि ।

५. 'मैं छोटा हूँ, मोटा हूँ'- ऐसी मान्यता को क्या कहते हैं ?
एकत्व बुद्धि ।

६. 'यह मेरा घर है, यह मेरे मम्मी-पापा हैं'-
ऐसी मान्यता को क्या कहते हैं ?
ममत्व बुद्धि ।

७. 'मैं दूसरों को मारता हूँ, बचाता हूँ,
सुखी-दु:खी कर सकता हूँ' - यह
मान्यता किस भाव की जनक है ?
कर्त्ताबुद्धि ।

८. 'परपदार्थों से मैं सुखी-दु:खी हो सकता हूँ'-
यह मान्यता कौन सा भाव
व्यक्त करती है ?
भोक्तृत्वबुद्धि ।

10

सही उत्तर चुनिए

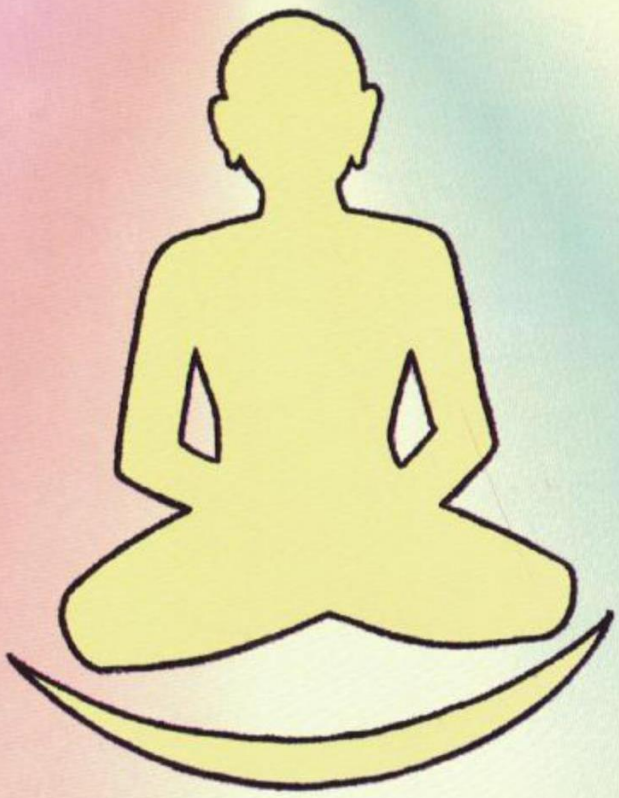

१. जो आकार सहित हो उसे क्या कहते हैं ?
(क) साकार (ख) अनाकार (ग) निराकार — क

२. जिसका आकार निकल गया हो उसे क्या कहतेहैं ?
(क) साकार (ख) अनाकार (ग) निराकार — ग

३. जिसका कोई आकार न हो उसे क्या कहते हैं ?
(क) साकार (ख) अनाकार (ग) निराकार — ख

४. सिद्ध भगवान का आकार कैसा होता है ?
(क) साकार (ख) अनाकार (ग) निराकार — ग

५. आत्मा कैसा होता है ?
(क) साकार (ख) अनाकार (ग) निराकार — ख

६. संसारी आत्मा कैसा होता है ?
(क) साकार (ख) अनाकार (ग) निराकार — क

11 पर्याय

१. प्रत्येक द्रव्य में ..... क्रमशः होती हैं, एकसाथ नहीं। (पर्यायें, गुण)
२. पर्यायों को ..... कहा जाता है। (क्रमवर्त्ती, सहवर्त्ती)
३. प्रत्येक द्रव्य की प्रत्येक पर्याय ..... क्रम में होती है। (निश्चित, अनिश्चित)
४. प्रत्येक द्रव्य की प्रत्येक पर्याय की परिणमन व्यवस्था .....है। (पराधीन, स्वाधीन)
५. प्रत्येक द्रव्य की एक - एक पर्याय, तीनों कालों के एक -एक ..... में खचित (निश्चित) है। (समय, प्रदेश)
६. तीन काल में जितने समय हैं, उतनी ही प्रत्येक द्रव्य की ..... होती हैं। (गुण - पर्यायें)
७. प्रत्येक पर्याय स्वसमय में ..... है। (निश्चत, अनिश्चत)
८. स्वसमय में निश्चित ..... को बदला नहीं जा सकता है। (पर्याय, गुण)
९. पर्याय ..... समय की होती है। (एक, दो, छह)

उत्तर:- पर्यायें, क्रमवर्त्ती, निश्चित, स्वाधीन, समय, पर्यायें, निश्चत, पर्याय, एक

12 अकर्त्तावाद

१. अकर्त्तावाद का दूसरा नाम क्या है ?
स्वकर्त्तावाद या सहजकर्त्तावाद

२. स्वकर्त्तावाद से क्या तात्पर्य है ?
प्रत्येक द्रव्य अपने परिणामों (पर्यायों) का कर्त्ता है ।

३. स्वकर्त्तावाद और अकर्त्तावाद में क्या अंतर है ?
स्वकर्त्तावाद और अकर्त्तावाद-पर्यायवाची हैं। दोनों एक ही बात को दो भिन्न-भिन्न दृष्टियों से बताते हैं। इनमें अंतर मात्र इतना है कि स्वकर्त्तावाद में स्व की दृष्टिकोण से कथन है और अकर्त्तावाद में पर की दृष्टिकोण से कथन किया गया है।

४. क्या भगवान किसी को सुखी - दुःखी कर सकते हैं ?
नहीं, भगवान किसी को सुखी-दुःखी नहीं कर सकते क्योंकि एक द्रव्य दूसरे का कर्त्ता नहीं है और पर्यायों में फेर बदल संभव नहीं है।

५. क्या आत्मा अपनी पर्यायों का अकर्त्ता है ?
नहीं, आत्मा अपनी पर्यायों का कर्त्ता है ।

६. क्या सभी द्रव्य अपनी -अपनी पर्यायों के कर्त्ता -फेरफार कर्त्ता हैं ?
यद्यपि सभी द्रव्य अपनी -अपनी पर्यायों के कर्त्ता हैं तथापि फेरफार कर्त्ता नहीं हैं ।

13 आत्मा की शक्तियाँ

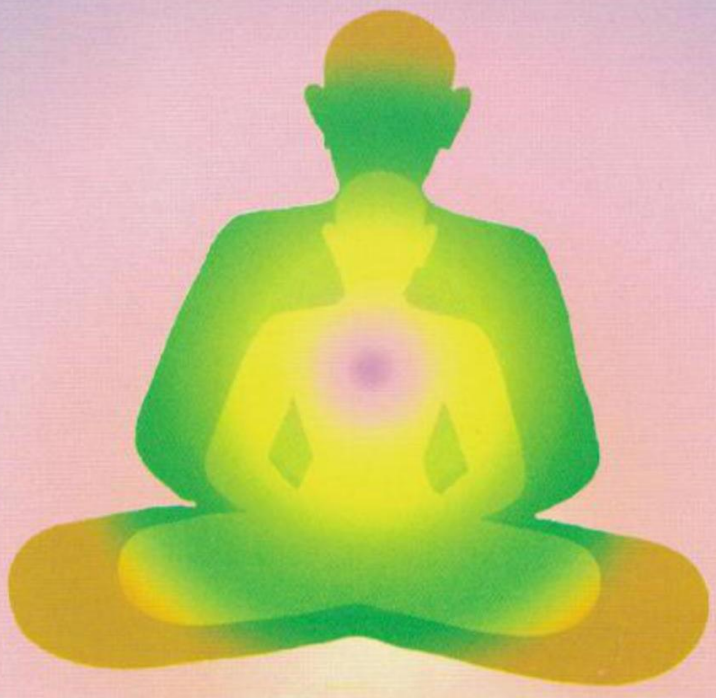

१. जीव में शक्तियाँ किस कर्म के अभाव से होती हैं ?
जीव में शक्तियाँ कर्म के सद्भाव या अभाव से नहीं होतीं, वे जीव का स्वभाव हैं ।

२. यह शक्तियाँ आत्मा में कब से हैं ? कब तक रहेंगी ?
स्वभाव होने से अनादि से हैं, अनंत काल तक रहेंगी ।

३. जीव की शक्तियाँ किस भाव रूप होती हैं ?
पारिणामिक भाव रूप।

४. पारिणामिक भाव जीव में कब तक रहता है ?
यह भाव जीव में सदा काल रहता है । यह अनादि - अनंत है ।

५. आत्मा की अनंत शक्तियों में प्रदेशभेद है या नहीं?
नहीं ।

६. आत्मा की अनंत शक्तियों में कौन सा भेद है ?
लक्षणभेद, स्वरूपभेद ।

७. क्या आत्मा में शक्तियाँ क्रम से रहती हैं ?
नहीं , शक्तियाँ आत्मा में अक्रम से एक साथ रहती हैं ।

जिनागम से

१. क्या नारकी मर कर एकेन्द्रिय हो सकता है ?
नहीं।

२. क्या देव मर कर एकेन्द्रिय हो सकता है ?
हाँ ।

३. क्या नरक गति से सैनी पंचेन्द्रिय ही होते हैं?
हाँ ।

४. क्या देव गति से मोक्ष जा सकते हैं ?
नहीं ।

५. क्या जीव नरकगति से देवगति प्राप्त कर सकते हैं ?
नहीं।

६. देवगति से किस - किस गति में जा सकते हैं ?
मनुष्य और तिर्यंचगति।

७. मनुष्य और तिर्यंच से किस गति में जाते हैं ?
चारों गतियों में।

८. मोक्ष किस गति से जाते हैं ?
मनुष्य गति से।

15 क्यों करूँ मैं प्रतिज्ञा ?

मनन: क्यों करूँ मैं प्रतिज्ञा उनकी ?
खाया नहीं जिनको मैंने कभी ।
यद्यपि मद्य - मांस - मधु मेरे भोज्य नहीं,
किन्तु बंधन में बंधना मुझे स्वीकार्य नहीं।
प्रतिज्ञा का बंधन भी तो बंधन होता है,
बंधन तो आखिर दु:खकर ही होता है ।

गुरुजी: बंधन की सूचक नहीं है प्रतिज्ञा,
दृढ़ता की सूचक होती है प्रतिज्ञा।
कमजोरी दूर करती है प्रतिज्ञा,
उपयोगी होती जीवन में प्रतिज्ञा ।
दृढ़ प्रतिज्ञ होते जो जीवन में,
सुखी होते हैं वह जीवन में ।

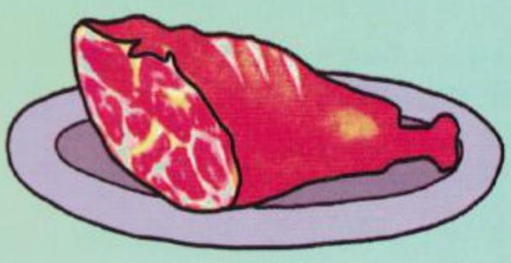

मनन: अनुपसेव्य का सेवन नहीं करता मैं,
अनिष्ट का भक्षण नहीं करता मैं ।
त्रसघात - बहुघात नहीं करता हूँ मैं,
कोई नशा भी नहीं करता हूँ मैं।
फिर क्यों करवाते हो मुझे प्रतिज्ञा ?
क्यों है जिनशासन में यह आज्ञा ?

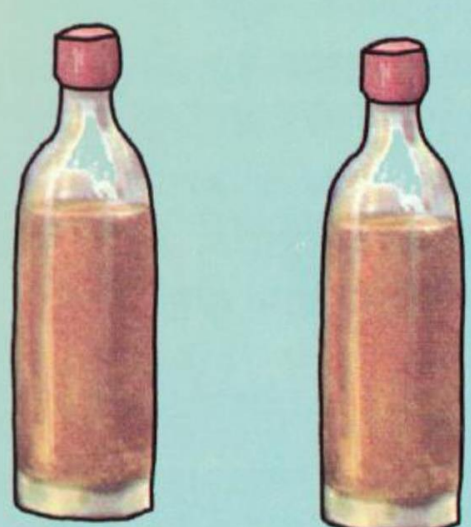

गुरुजी: कर नहीं रहे हैं जो काम अभी,
कर सकते हैं उन्हें जीवन में कभी।
यह भाव विद्यमान रहता है हमें,
उसका बंध निरंतर होता है हमें।
प्रतिज्ञा से वह बंध नहीं होता है,
अत: जिनशासन में यह आज्ञा है।

16 अपने को कैसे जानेंगे?

स्व को ज्ञान से जानता आत्मा,
पर को भी ज्ञान से जानता आत्मा।
ज्ञान से ही जाना जाता आत्मा,
स्व-पर प्रकाशक होता आत्मा।
कमजोरी है आत्मा की, इन्द्रियों से जानना।
स्वभाव है आत्मा का, उपयोग से जानना।

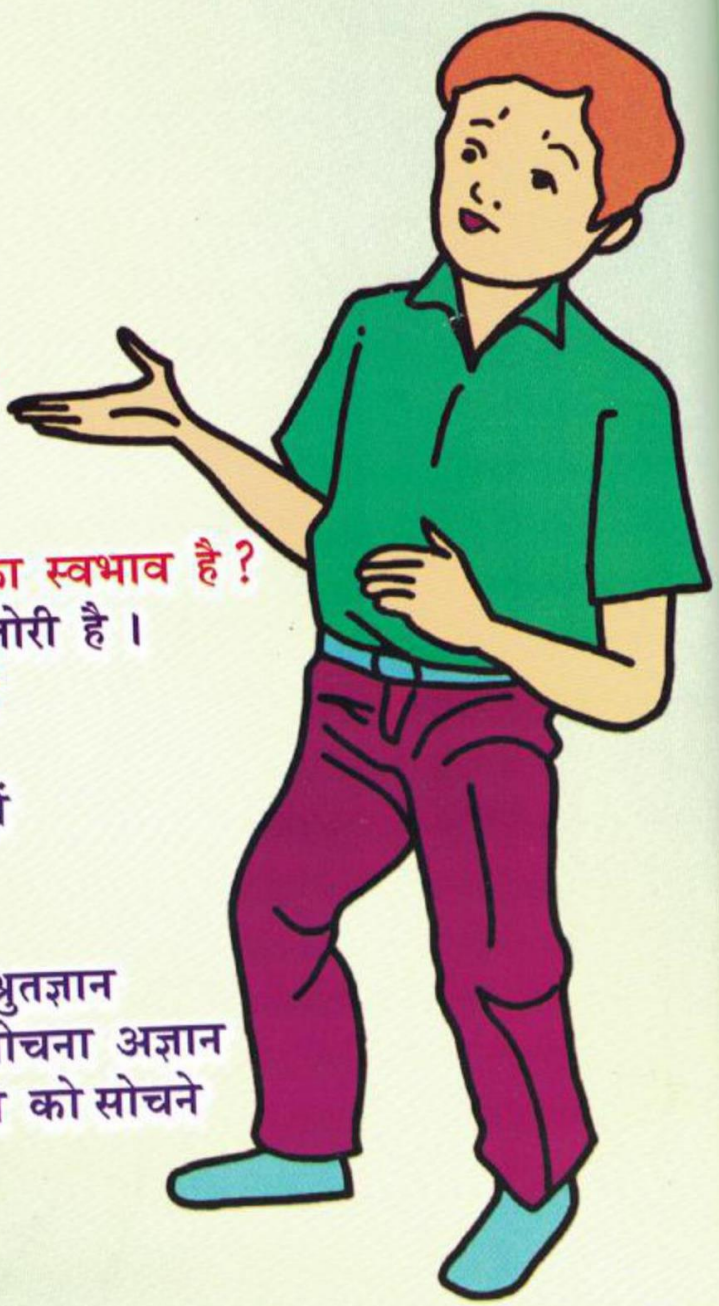

१. आत्मा का स्वभाव कैसा है?
स्व-पर प्रकाशक।

२. संसारी अवस्था में आत्मा को ज्ञान में निमित्त कौन बनता है?
इन्द्रियाँ

३. क्या इन्द्रियों द्वारा जानना आत्मा का स्वभाव है?
नहीं, विभाव है, विकृति है, कमजोरी है।

४. सिद्ध अवस्था में आत्मा को ज्ञान में निमित्त कौन बनता है?
कोई नहीं, क्योंकि सिद्ध अवस्था में अतीन्द्रिय ज्ञान होता है।

५. क्या सिद्ध सोचते हैं?
नहीं, सोचने की क्रिया मतिज्ञान, श्रुतज्ञान में होती है; केवलज्ञान में नहीं। सोचना अज्ञान का द्योतक है, पूर्णज्ञानी केवलज्ञानी को सोचने की आवश्यकता ही नहीं है।

बाल साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट लेखन हेतु श्री अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद द्वारा पं. टोडरमल पुरस्कार से सम्मानित विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया को सम्प्रति ८ मार्च २००८ को महिला दिवस के अवसर पर मुम्बई की महापौर के शुभ कर कमलों से सम्मानित किया गया। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की आप सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर (म.प्र.) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ।

आपने बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया।

आपके द्वारा एम. ए. में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई।

आपने 'आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार: एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी. एच. डी की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों को ध्यान में रखते हुए आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथों और टीकाकारों का सर्वांगीण शोधपरक विवेचन सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है जो कि विद्वत्-जन और बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट करता है।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदविज्ञान कराया गया है। अद्यावधि जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन, चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्त्वज्ञान का समावेश - इन पुस्तकों की विशिष्ट पहचान है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन - जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधायों के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेद-विज्ञान से ओतप्रोत हैं। सरलता आपकी कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता है। कलरफुल चित्रों के माध्यम से रोचक प्रस्तुति और आकर्षक आधुनिक भाषा-शैली में सर्वप्रथम लिखी गई आपकी बाल पुस्तकें मील का पत्थर साबित हुई हैं।

सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का हीरे-जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती ही हैं, तथा शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों में आपके द्वारा बालकों और युवाओं के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी कम समय में अधिक से अधिक तत्त्वज्ञान प्राप्त करते हैं।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी २८ पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनकी सूची अंदर प्रकाशित की गई है।